IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की ऐतिहासिक संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

Dr SUPRIYA SANJU
Assistant Professor
SANSKRIT
Amity Center for Sanskrit and Indic Studies
Amity School of Liberal Arts
Amity University Haryana

शोध सारांश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य की विचारधारा के साथ साथ समाज भी परिवर्तित होता जाता है। समाज और संस्कृति के बीच पारस्परिक सम्बन्ध होने के कारण समाज के साथ संस्कृति भी परिवर्तित होती जाती है। समाज और संस्कृति के परिवर्तन के समय-समय पर अनेक कारण रहे हैं। वर्तमान में वैश्वीकरण सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी कारण रहा है। वैश्वीकरण। का प्रत्येक समाज पर अलग-अलग तरह का प्रभाव पड़ा है। भारतीय समाज और संस्कृति को वैश्वीकरण ने अनेक प्रकार से प्रभावित किया है। वैश्वीकरण की दुनिया भर में व्यापक भूमिका है। इसने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। न केवल भारत में, बल्कि विश्व के विचारों और विचारों के आदान-प्रदान के परिणामस्वरूप विश्व स्तर पर लोगों की जीवन शैली और जीवन स्तर में बड़ा बदलाव आया है। भारतीय संस्कृति इस परिवर्तन प्रक्रिया के लिए कोई बाधा नहीं है। वैश्वीकरण के उदय के साथ हमारी गहरी जड़ें परंपराओं और रीति-रिवाजों ने अपनी पकड़ ढीली कर दी है। भारत की एक समृद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है और इसकी संस्कृति का गौरव पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। वैश्वीकरण ने न केवल भारत में पश्चिमीकरण को जन्म दिया है, बल्कि इसके विपरीत भारतीय संस्कृति ने भी विश्व स्तर पर अपना प्रभाव फैलाया है।

मुख्य शब्द- वैश्वीकरण, समाज, संस्कृति, परिवर्तन, विकृति, परिवार, विकास, मीडिया, बाज़ार, विज्ञापन।

भूमिका

वैश्वीकरण एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें दुनिया के सभी देश एक-दूसरे से आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक रूप से जुड़े हुए हैं। इस प्रक्रिया में सभी संभव स्तरों पर वैश्विक संचार बढ़ता है तथा विश्व में एकरूपता और क्षेत्रीयता दोनों की प्रवृत्ति बढ़ती है। इस प्रक्रिया में कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में पडते हैं।वैश्वीकरण की सम्पूर्ण विश्व में व्यापक भूमिका है। इस ने हमारे जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है। न केवल भारत में, अपितु विश्व के विचारों और विचारों के आदान-प्रदान के परिणामस्वरूप विश्व स्तर पर लोगों की जीवन शैली और जीवन स्तर में बड़ा बदलाव आया है। भारतीय समाज और संस्कृति इस परिवर्तन प्रक्रिया से अछूता नहीं रहा है। वैश्वीकरण के उदय के परिणामस्वरूप हमारी वैदिक समाज और संस्कृति ने अपनी पकड़ ढीली कर दी है। भारत की एक समृद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है और इसकी संस्कृति का गौरव पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। वैश्वीकरण ने न केवल भारत में पश्चिमीकरण को जन्म दिया है, बल्कि इसके विपरीत भारतीय संस्कृति ने भी विश्व स्तर पर अपना प्रभाव फैलाया है।

वैश्वीकरण अब पहले की तरह जटिल शब्द नहीं रह गया है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि अब वैश्वीकरण को उसके आर्थिक आयामों के अलावा अन्य आयामों के आधार पर भी व्याख्यायित किया जाने लगा है जिनमें राजनीतिक, सामाजिक, साँस्कृतिक और साहित्यिक आयाम प्रमुख हैं। वैश्वीकरण के प्रभावों से मानव–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है। बदलाव की इस प्रक्रिया से सामाजिक और साँस्कृतिक क्षेत्र भी अछूते नहीं है। भारतीय समाज और संस्कृति के सम्बन्ध में यह

बात और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यहाँ परम्परा और आधुनिकता के बीच द्वंद मिलता है। यही कारण है कि वैश्वीकरण के प्रभावों को भारतीय समाज और समाज विश्लेषक अलग-अलग तरह से समाज के उन्नति और अवनति से जोड़कर देखते है।

मुख्य बिन्दु

भारत की ऐतिहासिक संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव क्या और कितना पड़ा। सकारात्म पड़ा अथवा नकारात्मक। अथवा हम ये भी कह कि वैश्वीकरण का प्रभाव कैसा है किसी भी राष्ट्र के लिए ये हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। संस्कृति में आये परिवर्तन किसी के लिए सकारात्मक परिवर्तन किसी की दृष्टिकोण में वो नकारात्मक है। भारतीय समृद्ध ऐतिहासिक संस्कृति में वैश्वीकरण से आये परिवर्तन की बात करने से पूर्व हमें वैश्वीकरण क्या है ये जान लेना आवश्यक है।

वैश्वीकरण

'वैश्वीकरण' शब्द अपने आप में स्वतः व्याख्यात्मक है। यह सम्पूर्ण विश्व में लोगों के रहन-सहन में समानता बनाए रखने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच है। वैश्वीकरण दुनिया भर में हर जगह सांसारिक विचारों, मतों और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के आदान-प्रदान का परिणाम है। मानव दृष्टिकोण की हर उन्नति के साथ, वैश्वीकरण ने हर जगह अपने पदचिन्हों को जमाना शुरू कर दिया। आज के युग में वैश्वीकरण के प्रसार में दूरसंचार के विभिन्न माध्यमों, सोशल मीडिया और सबसे महत्वपूर्ण रूप से इंटरनेट की बड़ी भूमिका है।

वैश्वीकरण को शुरुआत में एक अर्थ आधारित प्रक्रिया के आधार पर परिभाषित किया गया लेकिन धीरे-धीरे जीवन के अन्य पक्षों पर वैश्वीकरण के प्रभावों को देखते हुए इसकी परिभाषा और अवधारणा भी व्यापक होती चली गयी। वैश्विक स्तर पर पूँजी, सेवा और ज्ञान के स्वछंद प्रवाह को वैश्वीकरण कहते है। "वैश्वीकरण वस्तुतः एक आर्थिक प्रक्रिया है, जो उदारीकरण तथा वस्तुओं, सेवाओं, पूँजी एवं वित्त के राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर स्वतंत्र संचालन को अभिव्यक्त करती है। आर्थिक आयामों के प्रभाव में वैश्वीकरण के अन्य क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रभावों को अनदेखा नहीं किया जा सकता है इसलिए समाजशास्त्रियों ने सामाजिक-साँस्कृतिक दृष्टिकोण से वैश्वीकरण को समझने का प्रयास किया है। "विश्व के प्रति व्यवहारिक दृष्टिकोण के फलस्वरूप जब विभिन्न देशों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों में वृद्धि होने लगती है तब इसी दशा को हम वैश्वीकरण कहते हैं। हम ये भी कह सकतें है कि वैश्वीकरण विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृति और बोलियों के लोगों को आपस में मिलाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र प्रदान करने का माध्यम है।

वैश्वीकरण के पूरे विश्व में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हैं। पर्यावरणीय चुनौतियों से लेकर जलवायु प्रभाव, वायु, जल, मृदा प्रदूषण आदि से लेकर साइबर अपराध तक; वैश्वीकरण का वैज्ञानिक प्रगति के सभी दुष्प्रभावों में बहुत बड़ा योगदान है। व्यापार हो कोई भी कार्य हो या फिर देश की आर्थिक और आर्थिक स्थिति कोई भी क्षेत्र वैश्वीकरण की पहुंच से पीछे नहीं रह गया है।

वर्तमान में जनसंचार के साधनों में वृद्धि के फलस्वरूप वैश्वीकरण में वृद्धि हो रही हैं। वैश्वीकरण के फलस्वरूप विभिन्न समाजों की स्थानीय संस्कृति में भी परिवर्तन के तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे हैं। किसी भी देश की संस्कृति वहां के क्षेत्र और भाषा का ही चित्रण नहीं करती, अपितु वहां रहने वाले नागरिकों की मानसिकता से शुरू होती है। भारतीय संस्कृति अपनी विरासत और संसाधनों के संबंध में काफी समृद्ध है। अतः हम भारतीयों का यह दृष्टिकोण रहता है कि हम अपनी समृद्ध ऐतिहासिक संस्कृति का सम्मान करें और सम्पूर्ण विश्व हमारी संस्कृति को आदर से देखें और अपने भी। किन्तु अन्य देशों की भाँति वैश्वीकरण ने हमारी संस्कृति पर भी गहरा प्रभाव। कारण यह है कि जब विभिन्न संस्कृतियों वाले देश प्रायः एक-दूसरे के सम्पर्क में आने लगते हैं तो उनकी सांस्कृतिक विशेषताओं में भी मिश्रण होने लगता है। भारत की वैदिक संस्कृति पर भी वर्तमान समय में वैश्वीकरण के कारण अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन निम्नलिखित हैं-

पारिवारिक संस्कृति और संरचना पर प्रभाव – वैश्वीकरण के कई आयाम हैं लेकिन उसके मूल में अर्थ ही है इसलिए आज मनुष्य के सम्बन्ध आर्थिक आधार पर ही टिके हुए हैं या यूँ कहें कि पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्ध आर्थिक शक्तियों के शिकार होते जा रहे हैं। जिसका सीधा प्रभाव सामाजिक और साँस्कृतिक मूल्यों पर पड़ रहा है।

भारतीय पारिवारिक परम्परा को देखें तो पारिवारिक संरचना सयुंक्त परिवारों की ही मिलती है। जहाँ सम्बन्धों में स्थिरता और मजबूती दिखाई देती है। इस पारिवारिक संरचना में परिवार के सभी सदस्य सुरक्षित रहते हैं। पाश्चर विद्वान के अनुसार "भारतीय परिवार बड़े व शोरगुल वाले होते हैं, जिसमें माता-पिता और बच्चों के अतिरिक्त चाचा-चाची और कभी-कभी ममेरे-फुफेरे भाई-बहन एक ही छत के अन्दर रहते हैं, जिसमें दादा-दादी की अहम् भूमिका हुआ करती है। वैश्वीकरण जनित उन्मुक्त की नीतियों

ने परिवार की इस संरचना को तीव्रता से तोड़ने का प्रयास किया। यह बिडम्बना ही है कि जो वैश्वीकरण विश्व परिवार और विश्व गाँव कि बात करता है वही तीन पीढ़ियों के परिवार को एक साथ नहीं रख पाया। सयुंत परिवार विघटित होकर एकाँकी परिवार में परिवर्तित होते गए।

वैश्वीकरण से विघटित होते परिवारों में सबसे ज्यादा परिवार के वृद्धों और बच्चों पर इसका प्रभाव पड़ा । सयुंत परिवारों के मुखिया और समाज के वटवृक्ष कहे जाने वाले वृद्धों की स्थिति काफी चिंताजनक को गई वो अपने ही घर से निकले जाने लगे। अपनी संतान के प्रेम और सम्मान के लिए वे मोहताज हो गए। उन वृद्धों का कुछ सम्मान कुछ हद तक बचा है जो आर्थिक आधार पर अपनी संतान कि मदद कर पा रहे हैं। किसी समाज और संस्कृति के लिए इससे ज्यादा शर्मनाक बात और कुछ नहीं हो सकती है। वैश्वीकरण ने समाज का यह भ्रम भी तोड़ा है कि वृद्ध ज्ञान का भण्डार होते हैं, क्योंकि उनका ज्ञान तकनीकी युग में अप्रासंगिक हो गया है। वैश्वीकृत समाज में जो स्थिति वृद्धों की है बच्चों कि स्थिति उससे कुछ अलग नहीं है। आज पैसा कमाने कि अंधी दौड़ में माता-पिता इतने मशगूल हो गए हैं कि उन्हें अपनी संतान के प्रति कोई लगाव ही नहीं रह गया है। बच्चों को खिलाने-पिलाने से लेकर स्कूल लाने-ले जाने तक के लिए नौकर रखे हुए हैं। इस स्थिति में बच्चों को अपने माता-पिता से किसी प्रकार का लगाव नहीं रहेगा तो भविष्य वृद्धा आश्रम कि ओर ही संकेत करता है।

विवाह का महत्व कम हो रहा है, तलाक में वृद्धि हुई है, लिव-इन संबंधों में वृद्धि हुई है और सिंगल पेरेंटिंग बढ़ रही है। वैश्वीकरण का यह प्रभाव और परिवर्तन दाम्पत्य सम्बन्धों में भी प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। भारतीय परिवार और संस्कृति की पति परमेश्वर वाली अवधारणा को आज की महिलायों ने सिरे से खारिज कर दिया है जो बहुत हद तक सही भी है। पति क्रूर, अत्याचारी जैसा भी हो उसे स्वीकारना कोई समझदारी भी नहीं है। अब वह इस परम्परागत दासता को तोड़ती दिखाई देती है। विवाह को आत्माओं का बंधन माना जाता था; लेकिन आज विवाह पेशेवर और संविदात्मक होता जा रहा है। हालांकि, विवाह के रूपों में बदलाव के बावजूद, यह एक संस्था के रूप में कम नहीं हुआ है। महिलाओं कि दशा में हो रहे परिवर्तन में एक प्रमुख परिवर्तन यह चिन्हित किया गया कि परम्परागत पारिवारिक परम्परा में जो माँ पूजनीय थी वैश्वीकृत समाज में वह स्थान पत्नी ने ले लिया है। इसका परिणाम यह हुआ कि माँ अपना सम्मान खोती चली गयी। एक ही प्रक्रिया किस प्रकार महिलाओं की स्थिति को बदल देती है यह इसका एक प्रमाण प्रस्तुत करता है।

वेश-भूषा, खान-पान एवं रहन-सहन के क्षेत्र में प्रभाव- वैश्वीकरण के फलस्वरूप पश्चिमी देशों की संस्कृति का प्रभाव हमारे वेश-भूषा, खान-पान एवं रहन-सहन के क्षेत्र में पड़ने लगा है। भारतीयों के शिष्टता के प्रदर्शन, नैतिक मूल्यों एवं सम्मान प्रदर्शन करने के तरीकों में भी पाश्चात्य संस्कृति हावी है। पहले यह प्रभाव नगरों तक ही सीमित था लेकिन अब ग्रामीण समाज में भी पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा हैं। अब इस बात का भय होने लगा हैं कि कहीं व्यक्ति के जीवन पर कुछ समय बाद प्राचीन भारतीय संस्कृति की मौलिक विशेषताओं का प्रभाव कम न हो जाये। आज के मनुष्य का खान-पान भी वैश्विक होता जा रहा है। ऐसा कहा जा सकता है कि वैश्विक होने के कारन आज परम्परागत खान-पान पिछड़ते जा रहे हैं। लोगों के मन में चाउमिन, मोमोज, बर्गर, पिज्जा, सेंडबिच इतनी गहराई से जगह बना गए हैं कि इनके अलावा बाज़ार में और कुछ दिखता और बिकता ही नहीं है। छोले, जलेबी, समोसा और पकोड़ी जैसे परम्परागत खाद्य सामग्री बाज़ार से नदारद ही मिलती है। यही स्थिति शीतल पेय पदार्थों की भी है पेप्सी, कोकाकोला और लिम्का ने लस्सी और नीम्बू पानी को बाज़ार और प्रचलन से बाहर कर दिया है। जो वस्तुएं समाज के अभिजात वर्ग के उपयोग की हुआ करती थी वह आज जनसामान्य की पहुँच में आसानी से है। वैश्वीकरण के समर्थक इसको साँस्कृतिक आदान-प्रदान के रूप में देखते हैं उनका मानना है कि इस प्रक्रिया में यदि हम विश्व की अन्य संस्कृतियों को अपना रहे हैं तो विश्व स्तर पर हमारी संस्कृति को भी अपनाया जा रहा है।

परिधान -संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू परिधान भी है जिस पर वैश्वीकरण का प्रभाव ज्यादा देखा जा सकता है। यह पहनावा कई अवसरों पर इतना वैश्विक हो जाता है कि वह अश्लीलता और फूहड़ता की सीमा तक पहुँच जाता है। प्रश्न यह नहीं है कि अपने परिधानों को क्यों छोड़ा जा रहा है बल्कि प्रश्न यह है कि जो अपनाया जा रहा है वह समाज में किस हद तक स्वीकार्य है। संस्कृति निरंतर परिवर्तित होती रहती है इसलिए इसके अवयवों में भी परिवर्तन लाजमी है लेकिन स्वीकार किये जाने की सीमा तक ही। जींस, टी-शर्ट पहनना कोई गुनाह नहीं है लेकिन साड़ी, धोती, सलवार, सूट और पैंट-कमीज़ को पहनना भी नहीं छोड़ना चाहिए। अपनी संस्कृति के साथ अन्य संस्कृति को अपनाना संस्कृतियों का दोहरा प्रवाह है जो विश्व की संस्कृतियों को संबर्धित करता है।

कला, संगीत एवं सौन्दर्य प्रसाधन के क्षेत्र में प्रभाव- वैश्वीकरण का प्रभाव कला, संगीत, सौन्दर्य प्रसाधन एवं त्यौहारों के क्षेत्र में भी पड़ा है। इन पर संसार की अन्य दूसरी संस्कृतियों का स्पष्ट प्रभाव दिखने लगा है। अब संगीत एवं कला का भी इस तरह से बाजारीकरण होने लगा है कि जिससे लोग अधिक-से-अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकें।

सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रभाव- वैश्वीकरण का प्रभाव सांस्कृतिक मूल्यों पर भी दिखाई दे रहा है। किसी देश की संस्कृति को स्थायी बनाने में सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण होती है। अब परिवार में माता-पिता के द्वारा बच्चों को अपने सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा न देकर व्यवहार के उन तरीकों का प्रशिक्षण दिया जाने लगा है जिनका भारत की मौलिक संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं है। सांस्कृतिक जीवन में इस परिवर्तन के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं।

भाषा: भाषा संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। भाषा अभिव्यक्ति के माध्यम से किसी भी व्यक्ति के संस्कारों का पता आसानी से चल जाता है। वैश्वीकरण के प्रभावों से मनुष्य का भाषा संस्कार भी बदल गया है। अपने से बड़ों के प्रति जो सम्मान भाषा में झलकता था वह भाषा का शील अब गायब है। यह समाज और संस्कृति की अजीब बिडम्बना है कि अपने से उम्र में बड़े लोगों कोसीधे नाम लेकर बुलाया जा रहा है और उम्र में अपने से छोटों को आप से संबोधित किया जा रहा है। आज का भाषा संस्कार बहुत हद तक सिनेमा, मीडिया और विज्ञापन द्वारा निर्मित किया जा रहा है जिनके मूल में मुनाफ़ा है और मुनाफे की दौड़ में संस्कार और शालीनता नहीं देखी जाती है। इसके साथ वैश्विक बाज़ार ने जो भाषा संस्कार तैयार किया है उससे भाषा में कई विकृतियाँ जन्म ले रही हैं।विदेशी भाषाओँ में वृद्धि हुइ है। भारतीय बोली हमारी भाषा, हिंदी संस्कृत सभी को हेय दृष्टि से देखा जा रहा है।

उपसंहार

वैश्वीकरण संस्कृति को प्रभावित करता है। युगों से भारत का सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति खुला दृष्टिकोण रहा है और इस वजह से समृद्ध हुआ है। किन्तु पिछले कुछ दशकों में बड़े सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं जिससे यह डर उत्पन्न हुआ है कि हमारी स्थानीय संस्कृतियाँ खत्म हो जाएँगी। आज के मुद्दे कुछ मायनों में एक जैसे हैं तो कुछ मायनों में अलग। परिवर्तन का पैमाना और तीव्रता शायद अलग है।वर्तमान समय संस्कृतियों के टकराहट और संक्रमण का है। इसलिए कुछ विचारकों को लगता है कि वैश्वीकरण के इस दौर में क्षेत्रीय संस्कृतियों को संकट पैदा हो गया है। इसके ठीक विपरीत कुछ विचारकों का मानना है कि यह प्रत्येक संस्कृति के लिए खुला अवसर है कि वह विश्व पटल पर स्वयं को सिद्ध कर सके। वैश्वीकरण का यह प्रवाह एकतरफा नहीं है बल्कि इसमें संस्कृतियाँ क्षेत्रीय से वैश्विक और वैश्विक से क्षेत्रीय दोनों दिशा में प्रवाह करती हैं। । "एक विश्व संस्कृति का निर्माण भी इस प्रसार के लक्ष्यों के साथ जुड़ा हुआ है। यह बात दूसरी है कि अलग-अलग संस्कृतियाँ इस प्रसार को कैसे देखतीं हैं। सम्भावना है कि कुछ संस्कृतियाँ इसे अपने विस्तार के रूप में देखें और कुछ संस्कृतियाँ इसे संकट का दौर समझें। कोई भी अवधारणा या सिद्धांत अपना एक तरफ़ा प्रभाव लेकर नहीं आता है। उसके मानव जीवन पर कुछ सकारात्मक प्रभाव कुछ नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। भारतीय प्राचीन संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव भी कुछ इसी तरह का है। वैश्वीकरण के प्रभावों में भिन्नता का एक सबसे बड़ा कारण इसको समझने और स्वीकार करने में असमानता भी है। भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का मिला-जुला प्रभाव रहा है। संस्कृति के लिए वैश्विक द्वार खोलने का काम वैश्वीकरण ने ही किया है जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय संस्कृति विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। यह द्रष्टव्य है कि पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति को प्रभावित तो कर रही है, लेकिन वह उसका स्थान नहीं ले रही है, बल्कि दोनों संस्कृतियों का मिश्रण है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि संस्कृति को एक अपरिवर्तनीय निश्चित इकाई के रूप में नहीं देखा जा सकता है जो सामाजिक परिवर्तन का सामना करने पर या तो ढह सकती है या वही रह सकती है। आज भी इस बात की अधिक संभावना है कि वैश्वीकरण से न केवल नई स्थानीय परंपराओं बल्कि वैश्विक परंपराओं का भी निर्माण होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- चतुर्वेदी, डॉ० अनूप, 'वैश्वीकरण का भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव' प्रकाशन वर्ष -2013,
- सिंह, अमित कुमार, 'भूमंडलीकरण और भारत परिदृश्य और विकल्प', प्रकाशन वर्ष -2010
- सिंह, राम गोपाल, 'वैश्वीकरण मीडिया और समाज', प्रकाशन वर्ष -2011
- भार्गव, नरेश, 'वैश्वीकरण समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य',प्रकाशन वर्ष - 2014,